

प्रोफेसर रामदरश मिश्र

(सरस्वती सम्मान से सम्मानित व्यक्तित्व)
(संरक्षक)

INTERNATIONAL PEER- REVIEWED(REFEREED) JOURNAL

RNI (UPHIN/2021/80567)

साहित्य मेघ

ISSN: 2583 - 5750

(साहित्यिक हिंदी मासिक)

प्रकाशन का आरंभिक माह /वर्ष : अप्रैल 2021

सम्पादक मण्डल

भारत

प्रोफेसर ओमप्रकाश सिंह
भारतीय भाषा केन्द्र, जे.एन.यू.
नई दिल्ली
opsingh@mail.jnu.ac.in
M: (९८९९४४६८६९)
प्रोफेसर चन्द्रदेव यादव
विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग,
जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली
cyadav@jmi.ac.in
M: (९८९८९५८७४५)
प्रोफेसर जितेंद्र श्रीवास्तव
विभागाध्यक्ष हिंदी विभाग,
इंदिरा गांधी ओपन विश्वविद्यालय (इगू),
नई दिल्ली
jksrivastava@ignou.ac.in
M: 9818913798
प्रोफेसर राज कुमार
M: 09415201281
drrajkumar@bhu.ac.in
हिंदी विभाग, काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
प्रोफेसर प्रभाकर सिंह
(9450623078)
prabhakarhindi@bhu.ac.in
प्रोफेसर, हिंदी विभाग, काशी
हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी

प्रोफेसर श्रद्धा सिंह ९४९५५३०५८७
प्रोफेसर, हिन्दी-विभाग
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी
shraddha.singh@bhu.ac.in
डॉ. आभा गुप्ता ठाकुर
प्रोफेसर, हिंदी विभाग, काशी हिंदू
विश्वविद्यालय, वाराणसी
(9450960955)
abhag.hindi@bhu.ac.in
डॉ. गाजुला राजू
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी एवं आधुनिक
भारतीय भाषा विभाग, इलाहाबाद
विश्वविद्यालय, प्रयागराज २११००२
(9059379268)
raju.g@allduniv.ac.in
डॉ. जनीदन
(सहायक प्राध्यापक)
हिन्दी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज
9026258686
janardan@allduniv.ac.in
डॉ. बिजय कुमार रबिदास
bkrabidas@allduniv.ac.in
9432345604
सहायक आचार्य हिन्दी एवं आधुनिक
भारतीय भाषा विभाग, इलाहाबाद
विश्वविद्यालय, प्रयागराज २११००२

विदेश

प्रोफेसर उल्फत मुखोबोवा
ulpatxon_muxibova@tsuos.uz
M: 998946443037
Tashkand State
University of
Oriental Studies,
Tashkand, Uzbekistan
प्रोफेसर युज़ेल खेलकोवा
str@iaas.msu.ru.
M: +79199933635
एशिया और अफ्रीकी देश
अध्ययन संस्थान, मास्को राजकीय
विश्वविद्यालय, मास्को
Farzaneh Azam Lotfi
f.azamlotfi@ut.ac.ir
Associate Professor
Department of foreign
languages
University of Tehran, Iran

साहित्य मेघ

sahityamegh.com
sahityamegh@gmail.com

फरवरी 2024
वर्ष:4, अंक:2

डॉ. दानिश
9919142411
प्रधान संपादक
डॉ. तबस्सुम जहां
9873104110
उप-संपादक (अवैतनिक)

डॉ. राजविवेक कौर
9759912434
सह-संपादक (अवैतनिक)
कृष्ण कुमार जायसवाल
9450827797
प्रूफ रीडर

हिंदुस्तान की बहुलतावादी सामासिक संस्कृति और हिंदी-उर्दू की भाषायी सियासत!	शंभुनाथ तिवारी	4
भक्ति अदब में तसव्वुरे इश्क़	प्रो. उल्फ़त मुहीबोवा	14
आधुनिक अरबी साहित्य पर हिन्दी पौराणिक कथाओं का प्रभाव	मुखिद्दिनोवा दिलाफ़रुज़ जुहरिद्दिनोवना	19
मूल्य विघटन: साहित्य और भाषा का संदर्भ	डॉ. पूरनचंद टंडन	23
सभ्यता और युद्ध : 'महाप्रस्थान' के बहाने	डॉ. प्रवीण कुमार	29
कुबेरनाथ राय का भारतबोध	वागीश शुक्ल	37
आदिवासी जीवन की कथा-व्यथा : हिन्दी उपन्यास	डॉ. गाजुला राजू	45
भारतीय समाज का मनोविज्ञान: मैला आंचल	डॉ. अर्चना पाण्डेय	49
२१वीं सदी और भारत का भूराजनीतिक भविष्य सारांश	सूरज कुमार दुबे	53
'प्रसादोत्तर नाटकों में स्त्री : चिंतन एवं चित्रण'	कृष्ण कुमार जायसवाल	57
'संत साहित्य में लोक संस्कृति का स्वरूप'	पूजा सिंह	62
भारतीय संस्कृति में राष्ट्रीय एकता व इसकी विशेषताएँ: एक विमर्श	रत्नेश पाण्डेय	67
रामदरश मिश्र की आत्मकथा में मूल्यबोध	सौरभ मिश्र	71
विज्ञापन की दुनिया में स्त्री की छवि और एक जमीन अपनी	उमंग वाहाल	75
अभिव्यक्ति की नई राह पर स्त्री-लेखन	सर्वेश मिश्र	82
'भारतवर्षोन्नति कैसे हो सकती है' में राष्ट्रीय चेतना के स्वर	सिमरन	87
हिन्दी उपन्यासों में चित्रित यौन उत्पीड़न और नशाखोरी की समस्या	मनीष कुमार शुक्ला	91
सवर्णों में अवर्ण के दर्द को दर्शाता 'महाब्राह्मण'	चंचल कौशिक	95
समाचार		99
सूचना		100

भक्ति अदब में तसव्वुरे इश्क़

प्रो.उल्फ़त मुहीबोवा

दक्षिण एशियाई भाषाओं का विभागाध्यक्ष,
ताश्कन्द राजकीय प्राच्य विद्या विश्वविद्यालय,
उज़्बेकिस्तान।

E.Mail:ulfatmuhib8@mail.ru
Mob.: +998 94 644 30 37

प्रेम स्नेह से जुड़ी एक घटना है। और प्यार दिल में होता है। ज़मीन पे आल्लाह का घर इनसान का दिल है और मुहब्बत भी दिल में पैदा होती है यदि बाहर निकले तो सिर्फ़ किसी और के दिल में बस जाती है।

भक्ति साहित्य ईश्वर के प्रति प्रेम का गान करता है जो उस मानव हृदय में निवास करता है, इस प्रेम का पोषण और विकास करता है और मनुष्य और निर्माता को एक दूसरे के करीब लाता है। भक्ति साहित्य से परिचित कोई भी पाठक इस बात को अच्छी तरह समझेगा।

भक्ति साहित्य की रचना भक्त कवियों ने की जिन्होंने अपने काव्य में भगवान के प्रति अपने प्रेम को अभिव्यक्त किया। मध्यकालीन भक्ति साहित्य के विकास में जिन कवियों का सर्वाधिक योगदान रहा, वे आठ कृष्णभक्त कवियों का समूह 'अष्टछाप' थे।

सूरदास के नेतृत्व में इन कवियों ने अपना पूरा जीवन और रचनात्मकता अपने प्रिय भगवान कृष्ण के गायन के लिए समर्पित कर दी। उनमें से, सूरदास की कविता दुनिया भर में जानी और पढ़ी जाती है और उनकी कविताओं का कई भाषाओं में अनुवाद भी किया गया है।

सूरदास की कलम की सबसे सार्थक कृति सूरसागर है, जिसमें सूरदास महाभारत महाकाव्य की कहानी के माध्यम से मानव हृदय में भगवान कृष्ण के प्रेम के संबंध का वर्णन करते हैं और बताते हैं कि सृष्टिकर्ता भगवान भी प्रेम के पुरुष हैं। कहानी में महाभारत के पात्र विदुर और दुर्योधन कृष्ण को अतिथि के रूप में आमंत्रित करते हैं। दुर्योधन महल में तरह-तरह के पकवानों से सजाके रखता है, जबकि विदुर के घर में उबले हुए चावल के अलावा कुछ नहीं था।

कृष्ण महल में दुर्योधन की सजे-धजे मेज के बजाय विनम्र जीवन जीने वाले विदुर की मामूली झोपड़ी में चावल खाना पसंद करते हैं। घटना पर टिप्पणी करते हुए कृष्णा ने कहा: 'जो कोई भी मुझे प्रेम और भक्ति के साथ पत्र, फूल, फल या जल अर्पित करता है, मैं उसे बिल्कुल स्वीकार करता हूँ।'

इस घटना के माध्यम से, कवि ने यह दिखाने की कोशिश की कि कृष्ण की चावल की पसंद, जो लोगों का एक आम भोजन है, विदुर के घर में पवित्र लगता है, क्योंकि दुर्योधन जैसा अपने धन-दौलत से मनमानी से दूर महल में एक मुख्य मंत्री होते हुए भी बिल्कुल सादा जीवन गुज़ारा करता है और कृष्ण धन-दौलत नहीं प्रेम और भक्ति को मानता है।

गोविंदस्वामी के कृतित्व में कृष्ण और गोपियों का विषय भी बहुत समृद्ध रूप से व्यक्त किया गया है। उसके अनुसार, 'कृष्ण, बहुत प्यारा है, वह कभी देखो, गोपियों से लड़ता है, कभी उनके कपड़े चुराता है, और कभी-कभी उनके कंधों पर हाथ रखकर नृत्य करता है। ब्रज में एक भी गोपी नहीं बची है जो कृष्ण की दृष्टि में खुद को खो न दे'।

सीत तन लागत है अति भारी।
दे हों बसन सांवरे प्रीतम देह कंपत है सारी।
नेक दया नहीं आवत नंद नंदन अति दुखित ब्रज नारी।

गोविंद प्रभु करो मनोरथ पूरन हम तो दास तिहारी।

छितस्वामी भी एक ऐसे कवि थे जिन्होंने अपना पूरा

जीवन कृष्णभक्ति काव्य को समर्पित कर दिया। कृष्णभक्ति काव्य में छितस्वामी को मुख्य रूप से प्रेमगायक के रूप में जाना जाता है।

अपने भजनों में, उन्होंने कृष्ण के प्रति अपने प्रेम, अपने जन्म, अपने शाही बचपन, कृष्ण के लिए ब्रज की गोपियों के प्रेम और भक्ति, राधा-कृष्ण के प्रेम, उनके श्रीगार लीलाओं, अपने शिक्षक विठ्ठलनाथ की महानता के बारे में गाया। उदाहरण के लिए, कृष्ण के जन्म के बारे में वे लिखते हैं:

जे वसुदेव किए पूरन पत तेई फल फलित श्री वल्लभ देव।

जो गोपाल हुते गोकुल में तेई आनि बसे करि गेह।
जे वे गोप वधू हीं ब्रज में तेई अब वेदरिचा भई यह छीतस्वामी गिरिधरन श्री विठ्ठल तेई ऐई ऐई ऐई कुछ न संदेह।

'पुष्टि' संप्रदाय के सबसे कम उम्र के सदस्य नंददास ने दूसरों से छोटे होते हुए भी कृष्णभक्ति काव्य का एक सागर रचा।

उनकी कविता का मुख्य भाग ब्रज भूमि, राधा-कृष्ण का प्रेम, ब्रज भूमि में मनानेवाले विभिन्न त्योहार और परंपराएं, 'पुष्टिमार्ग' के दार्शनिक विचारों से संबंध विषयों को कवर करता है। कृष्ण के जन्म को समर्पित छंद नंददास सहित लगभग हर कृष्णवादी कवि की विशेषता है।

ब्रज भूमि में नियमानुसार जिस घर में बालक का जन्म होता है, वहाँ सब आनन्दित होते हैं, सभी को उपहार बाँटे जाते हैं, जो बधाई देने आते हैं वे भी उपहार लेकर आते हैं, इन परम्पराओं को नंददास ने अपने काव्य में गाया है:

बिज की नारी सेब मिली अई आजु बधाई री माइ,
सूदर नन्द महरि के मंदिर प्रगतयो पुत्र सकल सुखदई
जो जाके मन हती कामना सो दीनी नंदराय
'नंददास' कुं दई कृपा करि अपने लला की बलाय।
नंददास के लिए और, सामान्य तौर पर, सभी कृष्णभक्त कवियों के लिए, कृष्ण के प्रति प्यार से जुड़ हुआ उनके बचपन, उनकी यशोदा माँ और बाप नंद के साथ वाद विवाद, कृष्ण-रीधा के प्रेम, ब्रज भूमि की गोपियों के बारे में गाना एक पसंदीदा विषय है।

कवियों के लिए, सबसे पहल मकसद, यह कृष्ण के

प्रति उनके प्रेम और भक्ति को प्रदर्शित करना है, और दूसरा, कृष्ण कौन हैं, जो सुदूर अतीत में रहते थे, जो न्याय के लिए उनके संघर्ष में पांडुजोदास के रक्षक थे, जिन्हें संपूर्ण भारतीय राष्ट्र रहा है। सदियों से पूजा

यह लोगों को प्रकट करने के लिए था कि वह वास्तव में क्या था, ब्रज की भूमि के लोगों द्वारा उसे इतना प्यार और सम्मान क्यों दिया गया था, और उसके मानवीय और दैवीय दोनों गुणों को प्रकट करके उसके प्रति लोगों के प्यार को और मजबूत करना था।

सगुण भक्ति की दूसरी शाखा रामभक्ति शाखा है। यह कविता भगवान राम के नाम से जुड़ी हुई है, इसलिए कविता रामायण की घटनाओं, पात्रों और राम के प्रेम और भक्ति के मंत्रों से बनी है।

रामभक्ति काव्य के निर्माण में सबसे बड़ा योगदान देने वाले कवि तुलसीदास हैं, जो १६वीं और १७वीं शताब्दी में रहे। तुलसीदास, अन्य भक्तों की तरह, सबसे पहले, स्वयं एक भक्त के रूप में रहते थे और अपने कार्यों के माध्यम से दूसरों को भक्ति का प्रचार करते थे, विशेष रूप से सूरदास की तरह महाकाव्य 'रामायण' की घटनाओं और पात्रों के माध्यम से।

विशेष रूप से भक्ति में तुलसीदास ने अपने भक्ति का विचार राम के दो भाइयों भरत और लक्ष्मण के उदाहरण में दिखाया जो उनकी रचना 'रामचरितमानस' की घटना से संबंध है। हालाँकि राम के भाई लक्ष्मण और भरत भक्ति में समान हैं, फिर भी भारतीय इतिहास में भरत की भक्ति का विशेष महत्व है, और तुलसीदास भी इसे विशेष स्नेह और गर्व के साथ चित्रित करते हैं। रामायण में, भरत को शुरू में एक बेईमान भाई के रूप में चित्रित किया गया है, जो अपने भाई को धोखा देकर सिंहासन लेने का इरादा रखता है, क्योंकि राम राजा की पहली पत्नी कौशल्या के पुत्र हैं, और भरत उनकी दूसरी पत्नी कैकेय की संतान हैं। कैकेय अपने पुत्र भरत को चाहती हैं न कि राम को सिंहासन का उत्तराधिकारी और राम को सिंहासन से बाहर करने में सफल होती हैं। इसलिए राम के प्रति विशेष स्नेह रखने वाले लोग भरत से नफरत करने लगते हैं।

जब भरत को इस बात का पता चलता है, तो वह अपनी माँ से बहुत नाराज होता है और लोगों के सामने अपना नाम साफ रखने के लिए और यह साबित करने के लिए कि वह दोषी नहीं है, वह सिंहासन के उत्तराधिकार

बनने को त्याग देता है और अपने भाई राम जी के चप्पल को सिंहासन में रखकर स्वयं राम के वापस आने तक दूसरे वन में संयासी के रूप में चला जाता है।

इस निर्णय से भरत ने यह सिद्ध कर दिया कि अपने भाई राम, मातृभूमि और अयोध्या के लोगों के प्रति उनकी निष्ठा सच्ची है और लोगों के सामने खुद को पूरी तरह अपने भाई से असीम प्रेम करनेवाला एक समझदार भाई साबित करता है।

उसके बाद, देश में भरत का सम्मान पहले से भी अधिक बढ़ जाता है और अपनी जनता का इज्जत जीत लेता है। भरत की यह भक्ति लोगों के बीच बहुत आदर्श भाई का एक अमर उदाहरण है और उनका नाम भारतीय समाज में भक्ति का प्रतीक बन गया है।

इस लिये ऐसी अदृढ़ भक्ति के लिये कवियों ने भक्ति के आदर्शों को बढ़ावा देने के लिए भरत की भक्ति को विशेष भाव, संतोष और गर्व के साथ गाते हैं।

इस तरह के सुदृढ़ भक्ति और वफादारी के उदाहरण दोनों महाकाव्यों के पात्रों में देखे जा सकते हैं, विशेषकर रामायण में हनुमान और लक्ष्मण, महाभारत में राजकुमारी गांधारी, राजकुमारी कुंती, करण, जो कौरवों की गलतियाँ जानते हुए भी उन के प्रति सदा वफादार रहा।

तुलसीदास ने अपने भक्ति भाव से यह दिखाया कि प्रेम और भक्ति की शुद्ध भावनाओं वाले लोग कैसे होते हैं, लोगों को राजाओं और राजकुमारों के समान कैसे होना चाहिए, जो लोगों से प्यार करते हैं, न्याय की जीत के लिए संघर्ष के मार्ग पर चलने वाले लोगों कैसे होते हैं, इन सभी को राम और उसके आसपास के पात्रों के माध्यम से दिखाया।

रामभक्ति आंदोलन का प्रचार करने वाले तुलसीदास ने लोगों में राम के प्रति आस्था और विश्वास को मजबूत करने में बहुत योगदान दिया। ऊपर दिए गए उदाहरणों से यह समझा जा सकता है कि तुलसीदास ने भक्ति मार्ग में राम के प्रति अपने प्रेम और भक्ति को समर्पित कर दिया और राम, उनके कारनामों और उपलब्धियों को अपनी रचनाओं का मुख्य विषय बना लिया।

१७वीं शताब्दी में रहे मल्लूकदास एक अद्भुत भक्त कवि थे, जिनके मन में लोगों के लिए असीम प्रेम था और उन्होंने अपना जीवन आम लोगों के बोझ को कम करने और हमेशा उनकी मदद करने के लिए समर्पित कर दिया। शब्द 'संत किसी शिक्षक या किसी संप्रदाय से जुड़ा नहीं है,

उसका सच्चा शिक्षक निर्माता है' - जैसी बातें मल्लूकदास जी की हैं। उनके भक्ति विचार संत कबीर के विचार के अनुरूप हैं कि निर्माता केवल मानव हृदय में ही हो सकता है। मल्लूकदास के कृतित्व का अध्ययन किये साहित्यकार बलदेव वंशी लिखते हैं कि 'आज, मानवता जीवन के अर्थ को बाहर से ढूँढ़ रही है, खुद से नहीं, और भक्त और संत सिखाते हैं कि आपको इसे अपने आप से ढूँढ़ना चाहिए'।

इसलिए, मल्लूकदास की भक्ति का विचार, अन्य भक्तों के विपरीत, हमेशा बिना संतुष्टि के लोगों की सेवा करना, उनके बोझ को हल्का करना, जरूरतमंदों की जरूरतों को पूरा करना था। इलाहाबाद शहर में, जहाँ मल्लूकदास का जन्म और पालन-पोषण हुआ था, उस समय हिंदू और मुसलमान दोनों एक ही दयनीय स्थिति में रहते थे।

दूसरी ओर, मल्लूकदास ने उनकी स्थिति के बारे में पता लगाना, उनका बोझ कम करना और जरूरतमंदों की जरूरतों को पूरा करना अपना सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्य माना और वे जीवन के अंत तक इस कर्तव्य के प्रति वफादार रहे। इस सम्बन्ध में उनके निम्नलिखित श्लोक भी प्रसिद्ध हैं:

भुखहिं टूक, प्यासेहि पानी।

ऐहि भगति हरि के मन माहीं।

अपने १०८ वर्षों के जीवन के दौरान, मल्लूकदास ने बाबरी राजाओं की चार पीढ़ियों देखीं - अकबर शाह, जहाँगीर, शाहजहाँ और औरंगज़ेब। चार मुस्लिम राजाओं को देखने वाले मल्लूकदास ने निम्नलिखित श्लोकों में इस्लाम को मजबूत करके औरंगजेब की हिंदू विरोधी नीति का वर्णन किया:

सही जहन सुतपुत्र औरंगजेब, चलेय सुपंथ कुरन कितेबा,

वेद, पुराण मने करवावे, वामन पूजा कर न पावे।

काजी मौलाना करे बरई, हिन्दु को जजिया लगवई।

मल्लूकदास जी का 'दूसरों की जरूरतों को पूरा करने' पर आधारित भक्ति मार्ग, बचपन में ही प्रकट होना शुरू हुआ था। बचपन से ही वे प्रायः गंगा नदी के तट पर जाया करते थे और तरह-तरह की कल्पनाओं के बारे में सोचने का उन्हें बड़ा शौक था।

एक दिन जब ५ वर्ष का बालक को सड़क पर खेलते हुए देखे एक संत ने बच्चे के पिता को बुलवाया और उसे कहा कि उसका यह पुत्र भविष्य में एक राजा या संत बनेगा

और इतिहास में एक महान नाम कमाएगा। वास्तव में, बाद में उनका प्रत्येक गुण गरीबों, भूखे और जरूरतमंदों की जरूरतों से संबंधित मामलों में प्रकट होने लगा।

उदाहरण के लिए, एक दिन एक गरीब दरवेश भीख माँगने आया। मलूकदास को उस पर दया आ गई और उसने खलिहान का सारा अनाज उसे दे दिया। बाहर से आई उसकी माँ ने यह देखा और अपने बेटे को डाँटा। दूसरी ओर मलूकदास तो पहले ही घड़ों को अनाज से भर चुके थे, लेकिन रहस्य क्या है, यह न जानकर उनकी माता चकित रह गई थी।

इस प्रकार गांव में आने वाली बीमारियों और विभिन्न प्राकृतिक आपदाओं को दूर करने और लोगों की विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करने से संबंध कई गुणों के लिए उन्होंने प्रसिद्धि प्राप्त करना शुरू कर दिया।

उनके भक्ति विचार राजा औरंगजेब के दरबार में पहुंचे और औरंगजेब ने मलूकदास को महल में लाने का आदेश दिया। मलूकदास औरंगजेब के पास आते हैं, उनकी लंबी बातचीत होती है, औरंगजेब मलूकदास को महल में रहने का प्रस्ताव देता है, लेकिन मलूकदास इस प्रस्ताव को यह कहते हुए अस्वीकार कर देते हैं कि लोगों की सेवा करना उनका मुख्य कर्तव्य है।

राजस्थानी संत दादू दयाल उन संतों में से एक थे जो अकबर बादशाह के साथ लगातार संपर्क में थे, उनके बड़ी संख्या में शिष्य थे, और उनकी भक्ति का मार्ग इतिहास में 'दादू पंथी' ('दादू का मार्ग') के रूप में जाना जाता है।

कथाओं में कहा गया है कि दादू को कबीर जैसे ब्राह्मण परिवार ने गोद ले लिया था। जब दादू से उनके परिवार के बारे में पूछा गया, तो उन्होंने उत्तर दिया, 'मैं ब्रह्मांड का सेवक हूँ, और निर्माता मेरा परिवार है।'।

हालाँकि, दादू ने दुनिया को छोड़कर दुनिया से विमुख होने जैसे धर्मनिरपेक्षता की कभी वकालत नहीं की, भले ही उन्होंने अस्तित्व और सभी चीजों को झूठा और भ्रामक बताया। दादू लोगों से प्यार करते थे और उन्हें सच्चाई का रास्ता दिखाना अपना कर्तव्य समझते थे और उसी तरह रहते थे।

दादू के पसंदीदा शिष्यों में से एक संत रज्जब हैं। इसलिए, रज्जब, जिसके शिक्षक दादू दयाल का रज्जब के दृष्टिकोण पर गहरा प्रभाव था। रज्जब जी भी एक ऐसे कवि थे जिसने जहाँगीर, शाहजहाँ और औरंगजेब जैसे ३ बाबरी

राजाओं के युग को देखा।

रज्जब का भक्ति मार्ग भी अन्य भक्तों से भिन्न है। इस मार्ग की विशिष्टता यह है कि उन्हें ऐसा लगा जैसे कोई व्यक्ति केवल अपने गुरु के लिए जी रहा हो।

जब रज्जब बीस साल का होता है, तो उसके पिता उससे शादी करने में झिझकते हैं और एक दुल्हन ढूँढते हैं। अपने बेटे की नाराजगी के बावजूद शादी शुरू हो जाती है। लेकिन शादी के दिन रज्जब अपने पिता से ज़िद कर कहता है कि हम पहले अपने गुरु के घर जाएंगे, और फिर दुल्हन के घर। पिता सहमत हो जाता है और अपने बेटे के साथ शिक्षक दादू की मृत्युशय्या पर जाता है। रज्जब, दूल्हे के रूप में तैयार होकर चुपचाप आता है और अपने शिक्षक के बगल में बैठ जाता है और कहता है कि वह शादी करने से इंकार कर देता है।

रज्जब के पिता ने भी दादू दयाल से कहा, 'मेरा बेटा आपका बहुत सम्मान करता है, वह आपसे तभी बात कर सकता है जब आप उसे समझाएंगे कि आपको उससे शादी करनी चाहिए।' तब शिक्षक अपने छात्र रज्जब को देखता है और कविता की दो पंक्तियों के साथ अपनी राय व्यक्त करता है:

किया था कुछ काज को, सेवा सुमरिण साज,
दादू भूल्य बनदगी, सरया ने एको काज

रज्जब कहते हैं, दूसरे शब्दों में, विधाता ने अपने एक लक्ष्य के मार्ग में आपको शाही कपड़े पहनाए हैं, लेकिन आप अपने कर्तव्य को पूरा करने से इनकार कर रहे हैं। 'धर्मनिरपेक्षता के मार्ग में प्रवेश करना एक तेज तलवार की धार पर चलने जैसा है। अगर आप अभी शादी नहीं करते हैं, तो आपकी नजर हमेशा महिलाओं पर ही रहेगी और यह धर्मनिरपेक्षता की खासियत नहीं है। फिर रज्जब जी अपने शिक्षक से दो मुख्य बातें कहते हैं जो उनके अपने निर्णय पर दृढ़ता को स्पष्ट दिखाती हैं:

जितनी जनमी जगत में, जान रज्जब की मात!

सर्प अपनी कंचूल का परित्याग कर
दूसरे संप की कंचूली नहीं धरण करती।

उस दिन से रज्जब अपने स्वामी के घर में रहकर उसकी सेवा करने लगे। हालाँकि, ऐसा कहा जाता है कि

रज्जब ने दूल्हे के कपड़ों में धर्मनिरपेक्षता को स्वीकार किया, इसलिए वह अपने शिक्षक की सलाह के अनुसार अपने जीवन के अंत तक दूल्हे के कपड़े में ही रहा।

रज्जब अपने विचारों में संत कबीर के समर्थक थे और स्वयं के प्रश्न सहित उनके गुणों को भी बढ़ावा देते थे, उन्होंने हमेशा कहा:

कबीर की मर्याद है, रज्जब बोले जोये,
अन जल दूजे दिवस लेन, अंधी हरि सोये।

रज्जब जी मनमानी लोगों को अपने एक दोहे द्वारा जल्दी से इस रास्ते से भटका सकते थे। एक दिन एक दरवेश ने अपनी तारीफ़ करते हुए कहा, 'मैं हमेशा नंगे पाँव चलता हूँ, मैं अपनी ज़िंदगी को कभी पैसे से नहीं बाँधता और उसे इकट्ठा नहीं करता, यही दरवेशों की महानता है।' तो रज्जब जी ने एक दोहे से उसको ऐसा जवाब दिया था -
पशु भी पैसा नहीं गाहें, नहीं पाहीं पैजर,
रज्जब ऐसे त्याग से, मिले न सिरजन हार।

संत रज्जब की कविताओं में ज्ञान के रचयिता तक पहुँचने के मार्ग और उसमें शिक्षक के महत्व महानता के बारे में विभिन्न विचार परिलक्षित होते हैं।

अतः रज्जब अपने विचारों से भक्ति में 'गुरुभक्ति' दिशा के सबसे बड़े प्रतिपादक थे। गुरु दादू दयाल के रज्जब जैसे कई शिष्य थे जिन्हें भक्तों की गुरुभक्ति पंक्ति में शामिल किया जा सकता है।

मध्यकालीन भक्ति साहित्य के प्रतिनिधियों की रचनाओं में प्रतिबिम्बित प्रेम और भक्ति के विचारों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि

सबसे पहले, भक्ति के सिद्धांत के माध्यम से, सृष्टिकर्ता के प्रति मनुष्य का प्रेम और भक्ति और उसके माध्यम से मनुष्य के साथ यह विचार कि सृष्टिकर्ता के सामने सभी समान हैं, जो भारतीय आध्यात्मिकता में उस समय का प्रमुख विचार बन गया।

दूसरे, भक्ति के विचारों ने प्रत्येक व्यक्ति को अलग-अलग प्रभावित किया और परिणामस्वरूप, निर्माता में विश्वास, शिक्षक में विश्वास, मोमबत्ती की रोशनी में विश्वास ने भक्ति की अलग-अलग दिशाएँ बन गईं।

तीसरे, बाबरी वंश के सम्राज्य में भक्ति साहित्य का गठन और विकास हुआ और सारे बाबरी सम्राटों ने इसके

विकास में एक महान योगदान दिया।

प्रत्येक बाबरी वंश के राजाओं ने अपने समय के भक्तों या संतों के साथ बहुत अच्छे संबंध में रहे, जो विभिन्न धर्मों के सदस्य थे, और उन्हें नियमित रूप से महल के पदों पर नियुक्त भी करते रहे।

भक्ति के विकास में बाबूरियों से अकबर शाह का स्थान विशेष महत्व रखता है। अपनी धार्मिक सहिष्णुता, उच्च स्तर के विश्वास और अपने राज्य में भक्तों और संतों के प्रति सम्मान के साथ, उन्होंने उनके लिए स्वतंत्र और अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण किया, और अकबर शाह के काल का भक्ति साहित्य और भक्तों के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण उनके वंशजों द्वारा भी जारी रखा गया।

सहायक सूची

१. मुहीबोवा उ. बाबरी वंश के समय का साहित्य। ताशकन्द, २०१८. (उज़्बेक भाषा में).
२. खोदजायेवा त., मुहीबोवा उ. भारतीय भाषाओं का साहित्य। ताशकन्द, २०२०. (उज़्बेक भाषा में).
३. नंदकिशोर पांडेय। संत रज्जब। - वाराणसी, २००७.
४. दवे कृष्णवल्लभ। संत कवि दादू। - दिल्ली, १९८३.
५. बलदेव वंशी। दादु ग्रन्थावली। - दिल्ली, २००५.
६. बलदेव वंशी। मलूकदास। - दिल्ली, २००६.
७. रामबक्ष। दादू दयाल। - दिल्ली, २०११.
८. हरगुलाल। कृष्णदास। - दिल्ली, २००१.
९. हरगुलाल। गोवीन्दस्वामी। - दिल्ली, २००३.
१०. सारला चौधरी। नंददास। शकुण प्रिंटर्स। - दिल्ली, २००६.
११. वसंत यमदामिल। छीतस्वामी। बीबा प्रेस. - दिल्ली, २००३.